

**कॉलेज आफ फोरेस्ट्री (College of Forestry), केरल एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी
(Kerala Agricultural University), त्रिसूर के बी.एस.सी. (ओनर्स) फोरेस्ट्री के
चतुर्थ वर्ष के 29 विद्यार्थियों का आफरी, जोधपुर भ्रमण**

कॉलेज आफ फोरेस्ट्री (College of Forestry), केरल एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी (Kerala Agricultural University), त्रिसूर के बी.एस.सी. (ओनर्स) फोरेस्ट्री के चतुर्थ वर्ष के 29 विद्यार्थियों (18 छात्र व 11 छात्राएं) ने असिस्टेन्ट प्रोफेसर श्री श्रीनिवासन कोरापथ एवं श्री बीनू एन. कमलोलभवन के साथ दिनांक 15.12.2015 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर का भ्रमण किया। प्रारम्भ में संस्थान के निदेशक श्री एन. के. वासु भा.व.से. ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को पारिस्थितिकी तंत्र की जानकारी देते हुए स्थल विशेष के भूदृश्य की परिकल्पना (Concept of Landscape) को समग्र दृष्टिकोण से समझने का आव्हान किया। उन्होंने वानिकी में बदलती वन संवर्धन पद्धतियों (Silviculture Systems) का जिक्र करते हुए वृक्षारोपण (Plantation) का उल्लेख कर बताया कि इससे स्थानीय चीजों में परिवर्तन होता है और कालान्तर में प्राकृतिक पुनरुत्पादन (Natural Regeneration) भी प्रारम्भ हो जाता है। श्री वासु ने मरूस्थलीय क्षेत्र में वृक्षारोपण वानिकी का उल्लेख कर टिब्बा स्थिरीकरण (Sand Dune Stabilization) कार्यों में इसकी उपयोगिता बताई। श्री वासु ने यहां की महत्वपूर्ण प्रजाति खेजड़ी (*Prosopis cenereria*) का जिक्र कर इसकी उपयोगिता बतायी।

कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी भा.व.से. ने पॉवर पॉइन्ट प्रेजेंटेशन के माध्यम से संस्थान एवं संस्थान की शोध गतिविधियों की जानकारी दी।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रंजना आर्या ने नमक प्रभावित भूमि (Salt Affected Lands) के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि शुष्क क्षेत्रों में नमक का परिवहन संभव नहीं हो पाता तथा वहां प्रवाह एक जगह केन्द्रित (Converge) हो जाता है।

उन्होंने नमक प्रभावित क्षेत्रों के पुनर्वासन हेतु जिप्सम एवं नाइट्रोजन के प्रयोग (Amendments like use of Gypsum & Nitrogen) से राजस्थान में साल्वाडोरा प्रजातियों के पौधारोपण का उल्लेख किया। इसी तरह उन्होंने गुजरात में गेहूँ के भूसे (Wheat husk) आदि के उपयोग से पुनर्वासन के बारे में भी बताया। डॉ. रंजना आर्या ने शुष्क क्षेत्रों में वृक्षों से प्राप्त खाद्य पदार्थों में प्रोटीन, पत्तों में प्रोटीन (Leaf protein content), नीम (*Azadirchta indica*) एवं साल्वाडोरा (*Solvadora species*) आदि में तेल की मात्रा (oil content) तथा अकाष्ठ वन उपज के संबंध में किये गये सर्वे की भी जानकारी दी।

वैज्ञानिक डॉ. तरुण कान्त ने विद्यार्थियों को बताया कि वानिकी पादपों की आयु अधिक होती है इसलिए वानिकी शोध में समय अधिक लगता है तथा ये एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं के मददेनजर इसकी आवश्यकता और बढ़ जाती है। डॉ. कान्त ने जैव तकनीकी (Bio Technology) की जानकारी देते हुए बताया कि जहां पारम्परिक पुनरुत्पादन के तरीके (Conventional ways of regeneration) सफल नहीं होते वहां उत्तक संवर्धन (Tissue culture) जैसी तकनीक वैकल्पिक तरीके के रूप में अपनायी जा सकती है। डॉ. कान्त ने गुग्गुल (*Commiphora whigtii*) की स्थिति और उसके औषधीय गुणों का उल्लेख कर इस हेतु ले गयी गुग्गुल परियोजना का जिक्र किया तथा इसकी उत्तक संवर्धन तकनीक का उल्लेख किया। डॉ. कान्त ने आणविक जीवविज्ञान (Molecular Biology) की जानकारी देते हुए संस्थान में असारिया प्रजाति (*Lapidium sativum*) पर किये गये कार्यों के बारे में बताया।

संस्थान के जनसंपर्क अधिकारी एवं वैज्ञानिक डॉ. एन.के. बोहरा ने जल संरक्षण की, विशेषकर मरुस्थल क्षेत्रों में, आवश्यकता बताते हुए मैदानी क्षेत्रों में रिंग पिट (Ring Pit), खाई एवं डोली (Trench & Mound) एवं पहाड़ी क्षेत्रों के लिए ग्रेडोनी (Gradonie) जैसी तकनीक की जानकारी दी। डॉ. बोहरा ने टिब्बा

स्थिरीकरण (Sand Dune Stabilization) एवं जलप्लावित भूमि के पुनर्स्थापन (Restoration of Waterlogged land) के बारे में जानकारी दी।

इस दौरान प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया गया।

इसके बाद विद्यार्थियों के इस दल ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर शोध गतिविधियों का अवलोकन किया। दल ने परिसर में गुग्गुल के उत्तक संवर्धन (Tissue Culture) तकनीक से विकसित पौधों के पौधारोपण का भी अवलोकन किया।

तत्पश्चात दल ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केन्द्र का भ्रमण कर वहां प्रदर्शित विभिन्न शोध गतिविधियों एवं उपलब्धियों तथा विकसित तकनीकों आदि से संबंधित सूचनाओं एवं सामग्रियों का भी अवलोकन किया।





केरल कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों का आफरी का दौरा

नवज्योति/जोधपुर।

5107-21-91
16-12-2015

वानिकी महाविद्यालय, केरल कृषि विश्वविद्यालय, थिरुसूर, के सहायक प्रोफेसर श्री निवासन कोरापथ तथा बीनू एन. कमालोभवन के नेतृत्व में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर का भ्रमण कर वानिकी शोध के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर आफरी निदेशक एन. के. वासु, ने विद्यार्थियों को वानिकी एवं वानिकी में कैरियर बनाने, वानिकी शोध एवं वानिकी के महत्व के बारे में बताया। वासु ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद तथा आफरी के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी। कार्यक्रम में आफरी के कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष उमराम चौधरी ने आफरी की शोध गतिविधियों की जानकारी दी जबकि डॉ. रंजना आर्या ने लवणीय भूमि के उपचार पर एवं डॉ. तरुण कान्त ने गुग्गुल के टिश्यू



कल्चर एवं अनुवांशिकी पर जानकारी दी। डॉ. एन. के. बोहरा ने मृदा एवं जल संरक्षण पर जानकारी देते हुए विद्यार्थियों को जलप्लावित भूमि, टिब्बा स्थिरीकरण एवं वर्षा जल संरक्षण पर मरू क्षेत्र में किये जा रहे वानिकी कार्यों के बारे में विस्तार से

बताया। विद्यार्थियों को आफरी की विभिन्न प्रयोगशालाओं एवं निर्वचन तथा विस्तार केन्द्र का भ्रमण भी कराया गया। भ्रमण के दौरान मीता तोमर ने सहयोग किया। दल शैक्षणिक भ्रमण पर राजस्थान के दौर पर है तथा इसमें 18 छात्र एवं 11 छात्राएं हैं।